National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(60): 114-117
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ टुम्पा जाना,
सह-अध्यापिका,
नाड़ाजोल-राज-कलेज,
(पश्चिमवङ्ग)

Correspondence:
डॉ टुम्पा जाना,
सह-अध्यापिका,
नाड़ाजोल-राज-कलेज,
(पश्चिमवङ्ग)

वेदों में ललित कलाएं

डॉ टुम्पा जाना

सार- वेद भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्राचीनतम स्रोत माने जाते हैं, जिनमें न केवल धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन के निर्देश मिलते हैं, बल्कि कला, विज्ञान, और साहित्य से संबंधित गहन ज्ञान भी निहित है। वेदों में ललित कलाओं (Fine Arts) का विवरण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मिलता है। इन कलाओं में संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और काव्य प्रमुख हैं, जो मानव जीवन को सुंदरता, सौंदर्यबोध और रचनात्मकता से समृद्ध करती हैं। वेदों में संगीत और नृत्य का विशेष महत्व है। सामवेद में संगीत के विभिन्न स्वरों और तालों का उल्लेख है, जिसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों और यज्ञों के दौरान किया जाता था। नृत्य कला का वर्णन ऋग्वेद में अप्सराओं और देवताओं के नृत्य के संदर्भ में मिलता है। वेद स्वयं उत्कृष्ट काव्य रचनाओं का उदाहरण हैं। छंद, अलंकार और लयबद्धता का प्रयोग वैदिक मंत्रों में देखा जा सकता है। इससे प्राचीन भारत में काव्य और साहित्यिक रचनाओं की उन्नति का संकेत मिलता है। इस प्रकार, वेदों में ललित कलाओं का वर्णन मानव जीवन को संतुलित और सौंदर्यपूर्ण बनाने का साधन माना गया है। ये कलाएं केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं थीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति और समाजिक सामंजस्य का भी अभिन्न अंग थीं।

कुंजी शब्द- संगीत, ललित कला, वेद, नृत्य, वाद्य।

भूमिका- ललित कला का शाब्दिक अर्थ है "सौंदर्य की कला"। यह कला का वह रूप है, जो मुख्य रूप से रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध को महत्व देता है। ललित कला का उद्देश्य केवल व्यावसायिक लाभ अर्जित करना नहीं होता, बल्कि यह मानव भावनाओं, विचारों और सौंदर्य के विभिन्न रूपों को सजीवता से प्रस्तुत करने का माध्यम है। इस कला में कलाकार अपनी कल्पनाओं को विभिन्न माध्यमों के द्वारा मूर्त रूप देता है, जिससे दर्शक तथा पाठक मानसिक और भावनात्मक रूप से जुड़ पाते हैं।

ललित कला के अंतर्गत चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य, साहित्य, थियेटर, छायाचित्रण (फोटोग्राफी) और सिनेमा जैसे विविध कला रूप आते हैं। ये सभी कलाएं हमारे इतिहास, संस्कृति और समाज को प्रतिबिंबित करती हैं और समय के साथ परिवर्तनों को भी दर्शाती हैं। ललित कला न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह समाज के भीतर विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं के आदान-प्रदान का भी सशक्त माध्यम है।

वेद भारतीय ज्ञान, धर्म और दर्शन के प्राचीनतम स्रोत हैं, जिनमें न केवल आध्यात्मिक और धार्मिक सिद्धांतों का वर्णन है, बल्कि कला और विज्ञान के भी कई पहलुओं का उल्लेख मिलता है। वेदों में ललित कला का प्रत्यक्ष रूप से वर्णन नहीं किया गया है, लेकिन विभिन्न कलाओं के बीज इन ग्रंथों में निहित हैं। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में संगीत, नृत्य, चित्रकला और अन्य कलाओं के सिद्धांतों का संकेत मिलता है, जो आगे चलकर भारतीय ललित कला परंपरा के आधार बने।

ऋग्वेद में ललित कलाएं

संगीत - संगीत का स्थान सुन्दर कलाओं में से एक है। यद्यपि हम आमतौर पर सामवेद को संगीतमय मानते हैं, संगीत का संदर्भ आदिवेद या ऋग्वेद में भी विभिन्न संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है। इस चर्चा से पता चलता है कि ऋग्वेद में किस हद तक संगीत समाहित था। उदाहरण के लिए, प्रथम मण्डल के दसवें सूक्त में गायत्री छन्द के विशेषज्ञ विद्वान के रूप में देव इन्द्र की स्तुति का उल्लेख है – 'गायन्ति त्वा गायत्रिण:'[१] । प्रथम मण्डल के अड़तीसवें सूक्त में मरुत देवता के विषय में यही कहा गया है – 'गाय गायत्रमुक्थ्यम्'[२] । फिर दूसरे मंडल में बुद्धिमान इंद्र की स्तुति के लिए बृहत् नामक सामगान का उल्लेख है – 'इन्द्राय साम गायत, विप्राय बृहते बृहत्'[३] । पक्षियों के मधुर गीत की प्रशंसा ऋग्वेद में देखने को मिलती है – 'उद्गातेव शकुने साम गायसि'[४] - अर्थात्, हे पक्षी! तु सामगान करने वाले के तुल्य मधुर गान करता है। जो लोग सामगान गाते हैं, वे गायत्री और त्रिस्टुप छन्द में मंत्रों का भी सुन्दर गायन करते हैं। ऐसा दूसरे मण्डल के 43वें सूक्त में कहा गया है – 'उभे वाचौ वदति सामगा एव, गायत्रं च त्रैष्टुभं च'[५] ।

इंद्र देवताओं के राजा हैं। ऋग्वेद में अधिकांश सूक्त भगवान इंद्र को समर्पित हैं। अष्टम मंडल के ६९ वें सूक्त में इंद्र के लिए मंत्र गान का उल्लेख है – 'पिंगा परि चनिष्कदद्, इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम्'[६] । यह भी प्रार्थना की जाती है कि भगवान इंद्र यजमान के भजन और स्तुति सुनें – 'प्र स्तोषदुप गासिषत्, श्रवत् साम गीयमानम्'[७] । यजमान की यही इच्छा है कि मरुत इन्द्र के लिये वृत्रानाशक वृहत् सामगान गाएँ – 'बृहदिन्द्राय गायत, मरुतो वृत्रहंतमम्'[८] । मरुत भी गान के साथ ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं – 'येन ज्योतिरजनयन् ऋतावृध:'[९]। संगीत प्रेमी इंद्र ने भी सौ बांसुरियां दीं – 'शतं वेणून्'[१०] । इससे पता चलता है कि इन्द्र को संगीत की लत थी। फिर 'प्र गारत्रेण गायत, पवमानं विचर्षिणम्'[११] । इसका मतलब यह है कि - तुम सोम के लिए गायत्री छन्दों में सामगान करो। 'सखाय आ नि षीदत, पुनानाय प्र गायत'[१२] - इस कथन से यह ज्ञात होता है कि ऋग्वैदिक समाज में सामूहिक गायन का भी प्रचलन था। दोस्तों से यही कहा जा रहा है - 'सखायो मदाय, पुनानामभि गायत'[१३] । अर्थात्, हे मित्रों, तुम आनन्द के लिए पवित्र सोम का गुनगान करो।

नृत्य - ऋग्वैदिक समाज में नृत्य की व्यापकता का अंदाजा नृत्य की प्रशंसा देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। ललित कलाओं में संगीत के बाद नृत्य का स्थान दूसरा है। पहले मंडल में उषा के साथ नर्तक की विभिन्न समानताएँ दिखाई गई हैं। यथा – 'अधि पेशांसि वपते नृतूरिव'[१४]। अर्थात्, उषा, नर्तकी के तुल्य, नाना रूपों को धारण करती है। ऐसी ही तुलना उस मण्डल के श्लोक १२४ में भी मिलती है – 'उषा हस्रेव नि रिणीते अप्स:'[१५]। अर्थात् उषा, नर्तकी के तुल्य, अपने रुप को प्रदर्शित करती है। फिर, उषा की तुलना कभी-कभी एक यज्ञीययूप से की गई है – 'स्वरुं न पेशो विदथेष्वञ्जन्'[१६] । नर्तक पद का उपयोग भगवान इंद्र के लिए विशेषण के रूप में किया गया है – 'महि दाशुषे नृतो,वज्रेण दाशुषे नृतो'[१७] । 'प्राञ्चो अगाम नृतयो हसाय'[१८] - यह इस बात से समझा जा सकता है कि नृत्य का समाज में एक विशेष स्थान था। अर्थात् 'हम नृत्य और मनोरंजन के लिए आगे आवें'। नर्तकों की प्रशंसा को और भी अधिक समझा जाता है जहाँ यह कहा गया है - नर्तक अपने पैरों से पृथिवी को झंकृत कर देते हैं –'अघोषयन्त: पृथिवीमुपब्दिभि:' ।[१९]

वाद्य - ऋग्वैदिक समाज में वाद्य की व्यापकता को वर्णन से समझा जा सकता है। आमतौर पर तब विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रों में वीणा बहुत लोकप्रिय थी। बाद के काल की सरस्वती देवी को हम वीणावादनरता के रूप में पाते हैं। दूसरे मंडल के ४३ वें सूक्त में उड़ते पक्षी की तुलना वीणा के स्वर से की गई है – 'यदुत्पतन् वदसि कर्करिर्यथा'[२०]। अर्थात्, हे पक्षी! तू उड़ता हुआ बीन बजाए के तुल्य बोलता है। वीणा में सात तारों में सात स्वर होते हैं – 'अभि वाणस्य सप्तधातुरिज्जन:'।[२१]

यजुर्वेद में ललित कलाएं-

यजुर्वेद को सामान्यतः यज्ञप्रधान माना जाता है। यजुर्वेद में यज्ञ-यज्ञ के नियमों का विशेष महत्व है। फिर भी यहां हमें कुछ अंशों में संगीत शास्त्र के साथ-साथ अन्य ग्रंथों का भी संदर्भ मिलता है। उदाहरण के लिए मंत्र १८.१ में यजमान प्रार्थना करता है कि - मुझे स्वर (संगीतस्वर) और श्लोक (गेय पद) प्राप्त हो – 'स्वरश्च में श्लोकश्च मे'[२२] । पुनः मंत्र ३०.२० में तबला वाद्ययंत्र का उल्लेख है। उस मंत्र में कहा गया है - नृत्य और आनन्द के लिए तल्ला है – 'नृत्तायानन्दाय तलवम्'[२३] । ३०/६ मन्त्र में कहा गया है नृत्य के लिए सारथि और गीत के लिए नट है –'नृत्ताय सूतं गीताय शैलूषम्'[२४] । यजुर्वेद में भी संगीत वाद्ययंत्रों में वीणा सबसे अधिक प्रचलित प्रतीत होती है। मंत्र ३०/१९ में वीणावादक को उत्सव आयोजित करने और शंखवादक को निमंत्रण देने का आह्वान किया गया है – 'महसे वीणावादम्, अवरस्पराय शंखध्मम्'[२५] ।

सामवेद में ललित कलाएं –

सामवेद उपासना प्रधान वेद है। सामवेद में १८७५ मंत्र है। इनमें से १७७४ मंत्र ऋग्वेद के है। केवल १०४ मंत्र नये है। यहां सामगान और इंद्र के साथ संबंध स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। ३८८ मंत्र कहते हैं – 'इन्द्राय साम गायत'[२६] अर्थात् इन्द्र के लिए सामगान करो। फिर, ३४२ वें मंत्र में, गायक इंद्र के लिए गाते हैं और स्तवन करने वाले विस्तार से इंद्र की स्तुति करते हैं – 'गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्ति अर्कमर्किण:'[२७] । अर्थात् हे इन्द्र ! गायक तेरा गान करते हैं और स्तुतिकर्ता तेरी स्तुति करते हैं। १८२९ वें मंत्र में कहा गया है कि सामवेद के गीत एक हजार या असंख्य तरीकों से गाए जा सकते हैं – 'गाये सहस्रवर्तनि'[२८] । अर्थात् मैं सामवेद को सहस्रों ढंग से गाता हूं।

अथर्ववेद में ललित कलाएं –

अथर्ववेद को ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, भैषज्यवेद, अथर्वाङ्गिरसवेद आदि भी कहा जाता है। अथर्ववेद में ५९८७ मंत्र है। यह ज्ञान का समन्दर है। इसमें ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, मनोविज्ञान आदि से सम्बन्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण शास्त्र प्राप्त होता हैं। अन्य ग्रंथों के साथ ललित कलाओं की चर्चा भी स्पष्ट है। यहां भी नृत्य का इंद्र से गहरा संबंध बताया गया है। उदाहरण के लिए, बीस-तम कांड के बारहवें सूक्त के छठे मंत्र में भजन के दौरान इंद्र के लिए बोलने वाले गायकों का उल्लेख है – 'पिङ्गा परि चनिष्कददिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम्'[२९] । यह भी कहा है कि नृत्य के दौरान वे इंद्र के साथ थे – 'नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम्'[३०] । अर्थात्, नृत्य के समय हम वीरों के अग्रणी इन्द्र के साथ रहें। सामगान के दौरान तीन छन्दों में ८० मंत्रों का जाप अथर्ववेद में मिलता है – 'अशीतिभिस्तिसृभि: सामगेभि:'[३१] । २० वें काण्ड के सूक्त १३२ के आठवें मंत्र में वीणा वाद्य का उल्लेख है – 'क एषां कर्करीं लिखत्'[३२] । अर्थात् इनमें से कौन वीणा बजाएगा? सूक्त २० में वीणा के साथ तम्बूरे का उल्लेख है – 'अव स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत्'[३३] । अर्थात् वीणा बज रही है, तम्बूरे ने उससे स्वर मिलाया। इसी प्रकार चतुर्थ श्लोक में वीणा और बीन का एक साथ उल्लेख किया गया है – 'यत्राघाटा: कर्कर्य: संवदन्ति'[३४] । अर्थात् आघाट (वीणा) और कर्करी (बीन) नृत्य के साथ बज रहे हैं।

निष्कर्ष-ललित कला मानव जीवन के सौंदर्य, रचनात्मकता और भावनाओं की गहन अभिव्यक्ति का माध्यम है, जो न केवल मनोरंजन करती है बल्कि समाज, संस्कृति और इतिहास को भी संजोती है। इसका प्रत्येक रूप—चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य, साहित्य, थियेटर, छायाचित्रण और सिनेमा—मानव जीवन के विविध पक्षों को दर्शाता है और जीवन के हर पहलू को सार्थक बनाता है। इस बात में है कि यह हमारी परंपराओं और मान्यताओं को जीवित रखती है। उदाहरण के लिए, शास्त्रीय नृत्य और संगीत हमारी प्राचीन धरोहर का जीवंत प्रमाण हैं। कला के माध्यम से इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं को संजोया जाता है, जैसा कि हमें अजंता की गुफाओं की भित्ति चित्रों या प्राचीन मंदिरों की मूर्तियों में देखने को मिलता है।

ललित कला का व्यक्तिगत और मानसिक स्वास्थ्य पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। आर्ट थेरेपी आजकल मानसिक तनाव और अवसाद को दूर करने का प्रभावी साधन बन चुकी है। साथ ही, संगीत और नृत्य जैसी कलाएं आत्म-अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्तित्व विकास में सहायक होती हैं।

इसके अतिरिक्त, ललित कला को बढ़ावा देती है। साहित्य और नाट्य कला न केवल ज्ञान का भंडार हैं बल्कि वे नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को भी विकसित करती हैं। आधुनिक समय में फोटोग्राफी और सिनेमा जैसे माध्यमों ने कला को वैश्विक मंच पर पहुंचाने में मदद की है, जिससे कलाकारों और रचनाकारों को पहचान और सम्मान प्राप्त होता है।

अंततः, ललित कला केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन को अर्थपूर्ण और संवेदनशील बनाने का माध्यम है। यह हमें जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने, भावनाओं को पहचानने, और संस्कृति को गहराई से समझने में मदद करती है। इसलिए, ललित कला मानवता की अमूल्य धरोहर है, जो वर्तमान और भविष्य दोनों में समाज और संस्कृति को निरंतर प्रेरित करती रहेगी।

वेद विभिन्न शास्त्रों का भण्डार हैं। इसमें धार्मिक अर्थात् यज्ञ, देवता, विज्ञान, पशुविज्ञान, मनोविज्ञान, कृषि, ज्योतिष, कला आदि के साथ-साथ ललित कलाएँ भी हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया के प्राचीन उपलभ्यमान ग्रंथ में ललित कलाओं के उल्लेख को पूर्वी और पश्चिमी दोनों आलोचकों द्वारा अत्यधिक सराहा गया है। प्राचीन काल में संगीत, नृत्य और वाद्ययंत्रों के मामले में समाज सांस्कृतिक विचारधारा वाला था, इसका प्रमाण वेदों में मिलता है। वेदों में ललित कला का उल्लेख गहराई से निहित है। वेदों में संगीत, नृत्य, काव्य और सज्जा-कला का जो रूप दर्शाया गया है, वह न केवल धार्मिक अनुष्ठानों का हिस्सा था, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं की नींव भी था। इन कलाओं ने आगे चलकर भारतीय ललित कला के विभिन्न रूपों को आकार दिया। इस प्रकार, वेदों ने न केवल आध्यात्मिकता बल्कि कला और सौंदर्यबोध की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो आज भी भारतीय समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग है।

ग्रन्थपञ्जी (Bibliography)

मीमांसक, युधिष्ठिर। श्रौत-यज्ञों का संक्षिप्त परिचय। हरियाणा: रामलाल कपूर ट्रष्ट, २००८

काणे, पाण्डुरंग वामन। धर्मशास्त्र का इतिहास (प्रथम भाग)। लखनऊ: उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, १९९२

শান্তা, বন্দ্যোপাধ্যায়। বৈদিক যুগরে যাগযজ্ঞ। কলকাতা: সংস্কৃত পুস্তক ভাণ্ডার, ১৪১৭

विश्ववन्धुः। अथर्ववेदः (शौनकीयः) (१मो भागः)। होसिआरपुरम्। विश्वेश्वरानन्दवैदिकशोधसंस्थानम्, २०१७ वि

डा.जमुनापाठकः। अथर्ववेदप्रातिशाख्यम् अथवा अथर्ववेदीया चतुरध्यायिका। वाराणसी:चौखम्बा विद्याभवन, २०१५

विनायक गणेश आपटे। कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयसंहिता (प्रथमो द्वितीयभागश्च)। पुणे : आनन्दाश्रममुद्रणालयः, १९४०

चतुर्वेदी, रामनारायणः। वेदवाङ्मयविमर्शः। जयपुर-६: श्री राजेश्वरी प्रिन्टार्स, १९७० .

सम्पा. हरिनारायण आपटे। तैत्तिरीयारण्यकम्(प्रथमो भागः)। पुणे: आनन्दाश्रममुद्रणालयः, १८९८

सम्पा. विनायक गणेश आपटे तैत्तिरीयारण्यकम्(द्वितीयो भागः)। पुणे: आनन्दाश्रममुद्रणालयः, १९२७

संदर्भ ग्रन्थ

[१] ऋग्वेद, १/१०/१
[२] ऋग्वेद, १/३८/१४
[३] ऋग्वेद, २/१८/१
[४] ऋग्वेद, २/४३/२
[५] ऋग्वेद, २/४३/१
[६] ऋग्वेद, ८/६९/९
[७] ऋग्वेद, ८/८१/५
[८] ऋग्वेद, ८/८९/१
[९] ऋग्वेद, ८/८९/१
[१०]ऋग्वेद, ८/५५/३
[११]ऋग्वेद, ९/६०/१
[१२]ऋग्वेद, ९/१०४/१
[१३]ऋग्वेद, ९/१०५/१
[१४]ऋग्वेद, १/३२/४
[१५]ऋग्वेद, १/१२४/७
[१६]ऋग्वेद, १/९२/५
[१७]ऋग्वेद, १/१३०/७
[१८]ऋग्वेद, १०/१८/३
[१९]ऋग्वेद, १०/९४/४
[२०]ऋग्वेद, २/४३/३
[२१]ऋग्वेद, १०/३२/४
[२२]यजुर्वेद, १८.१
[२३]यजुर्वेद, ३०/२०
[२४]यजुर्वेद, ३०/६
[२५]यजुर्वेद, ३०/१९
[२६]सामवेद, ३८८
[२७]सामवेद, ३४२
[२८]सामवेद, १८२९
[२९]अथर्ववेद, २०/९२/६
[३०]अथर्ववेद, २०/७६/२
[३१]अथर्ववेद, २/१२/४
[३२]अथर्ववेद, २०/१३२/८
[३३]अथर्ववेद, २०/९२/६
[३४]अथर्ववेद, ८/३७/५